प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक: एक परिचय

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पांचों महाद्वीपों और 120 से अधिक देशों में 8500 से अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मानवता की सेवा करने वाला आध्यात्मिक संगठन है। इस संस्था का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय अरावली की सुरम्य वादियों मुं स्थित पौराणिक और एकमात्र पर्यटक स्थल माउण्ट आबू है। पुराणों में माउण्ट आबू की महिमा का उल्लेख मिलता है जिसमें कहा गया है ब्रह्मा ने सृष्टि के आदि काल में ऐतिहासिक यज्ञ किया था जिससे चार वर्ण प्रकट हुए और सृष्टि के नवनिर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में मानवता के नव निर्माण के पौराणिक यशगाथा को चरितार्थ माउण्ट आबू स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कर रहा है। पूरे विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम' के प्राचीन भारतीय संस्कृति की मूल भावना का वर्तमान में पल-पल में विखण्डित हो रही मानवता के बीच प्रसार करने वाला यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय सही मायने में आधुनिक समय का अनोखा आध्यात्मिक संगठन है।

इस आध्यात्मिक विश्व विद्यालय का संस्थापक कोई मानवीय शरीरधारी व्यक्ति नहीं है, ऐसा इस संस्था की मान्यता है। इस संस्था का संस्थापक ज्योतिर्विन्दुस्वरूप परमपिता परमात्म शिव है। उन्होंने साधारण मनुष्य प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर सर्वमनुष्यताओं के कल्याणार्थ इस आध्यात्मिक संस्था की स्थापना किया है।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को 60 वर्ष की उम्र में आध्यात्मिक अनुभव औरसाक्षात्कार हुए। इन साक्षात्कारों ने इनके जीवन की दिशा और दशा ही बदल दिया। ब्रह्मा बाबा का पूर्व का नाम दादा लेखराज था। इनका जन्म सन् 1876 ई. में सिन्ध (वर्तमान समय पाकिस्तान में) के एक साधारण कृपलानी परिवार में हुआ था। उनके पिता एक शिक्षक थे तथा माता एक धर्म पारायण महिला थी। अत्यन्त सामान्य परिवार में जन्म लेने वाले दादा लेखराज के अन्दर बचपन से ही महानता के गुण विद्यमान थे। उन्होंने इन गुणों के बल पर ही कलकत्ता में सम्मानित और प्रतिष्ठित हीरों के व्यवसायी के रूप में अपनी पहचान बनाया। इन्होंने अपने नये-2 हीरों के आभूषणों का विकास किया। एक बार महारानी एलिजाबेथ ने स्वयं इनकी दुकान पर आकर आभूषणों की खरीदारी किया था जो आज भी महारानी के संग्रहालय में संग्रहीत है। दादा लेखराज के पारिवारिक और वयावसायिक सम्बन्ध अनेक राज घराने से थे।

दादा लेखराज जी को सर्वप्रथम मुम्बई में सुप्रसिद्ध बबुलनाथ के सामने स्थित अपने घर में एक दिन सत्संग करते समय 'विष्णु चतुर्भुज' का साक्षात्कार हुआ। यही इनके जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण समय था। ये गहन आध्यात्मिक अनुभव के लिए वाराणसी में महमूरगंज में स्थित अपने मित्र के आवास पर आ गए। एक दिन मध्यरात्रि में इन्हें नई दुनियां की स्थापना और इस पतित सृष्टि के महाविनाश का साक्षात्कार हुआ। इन साक्षात्कारों से मानव सृष्टि के इतिहास में एक नये अध्याय का सृजन हुआ। दादा लेखराज की पूर्णनिष्ठा और समर्पण भावना परमपिता परमात्मा शिव में हो गई। ज्योतिर्बिन्दुस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव ने दादा लेखराज को नई दुनियां की स्थापनार्थ अपना साकार माध्यम चुना। दादा लेखराज ने परमात्मा शिव के आदेश पर अपना सर्वस्व तन-मन-धन नई सृष्टि के स्थापनार्थ समर्पित कर दिया।

जीवन में आए इस अनोखे आध्यात्मिक परिवर्तन के फलस्वरूप दादा लेखराज ने सन् 1937 में

अपनी सम्पूर्ण चल सम्पत्ति लगभग 18 लाख रूपये को माताओं एवं कन्याओं का एक ट्रस्ट बनाकर नये सतयुगी भारत के नव निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। दादा लेखराज जिन्हें स्वयं परमात्मा शिव ने आध्यात्मिक नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, ने मानव सृष्टि के इतिहास में त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत किया। प्रजापिता ब्रह्मा ने सम्भवत: विश्व में सर्वप्रथम नारी-सत्ता द्वारा सम्पूर्ण रूप से संचालित इस आध्यात्मिक संस्था की स्थापना किया। इस प्रकार मानव सृष्टि के भविष्य दृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने नारियों का आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व आध्यात्मिक रूप से सशक्तिकरण करके उनके अधिकारों का मार्ग प्रशस्त कर दिया जब समाज में महिलाओं के अधिकारों की चर्चा तक भी नहीं होती थी।

परमात्मा शिव की प्रवेशता से पूर्व दादा लेखराज का सांसारिक जीवन भी मानवीय मूल्यों और त्याग की प्रतिमूर्ति था। वे सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धान्त में गहरा विश्वास रखते थे। उनका खान-पान और रहन-सहन सात्विक था। उनकी पत्नी का नाम यशोदा था। उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां थी। जिनमें एक पुत्री वर्तमान समय में दादी निर्मलशान्ता के नाम से ईश्वरीय सेवा में कलकत्ता में उपस्थित होकर विश्वपरिवर्तन के महान कार्य में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। उनका एक पुत्र नारायण वर्तमान समय में मुम्बई में रहते हैं। उनका भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं में महत्वपूर्ण योगदान है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन को त्याग और तपस्या से पूर्ण रूप से अवगुणों से मुक्त कर सर्व गुणों को अपनाकर दैवी गुणों से युक्म हो गये। सम्पूर्णता को प्राप्त कर ब्रह्मा बाबा ने 18 जनवरी सन् 1969 को अपने भौतिक नश्वर शरीर को त्याग करके सम्पूर्णता को प्राप्त किया।

संस्था का सम्पूर्ण परिचय:

'ओम मंडली' के प्रारम्भिक नाम से प्रारम्भ हुआ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, वास्तव में एक आध्यात्मिक संगठन है। विश्व शान्ति, सद्भावना एवं मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए समर्पित इस संस्था का प्रारम्भ सिन्ध, हैदराबाद (वर्तमान समय पाकिस्तान में) से हुआ था। प्रारम्भ में इस संस्था में योग-ध्यान के लिए 'ओम' की धुनी लगाई जाती थी इसलिए इस संस्था का नाम 'ओम मण्डली' पड़ा। संस्था के प्रारम्भिक दिनों में यहाँ आने वाले जिज्ञासुओं को विशेष आध्यात्मिक अनुभव एवं साक्षात्कार होते थे। इसलिए उन दिनों यह बात प्रचलित हो गई थी कि दिव्य साक्षात्कार करना हो तो 'ओम मण्डली' में जाना चाहिए।

नई सृष्टि और नये समाज के नव निर्माण के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पण कर देने वाले 400 'ब्रह्मा-वत्सों' से 'ओम मण्डली' आध्यात्मिक संस्था का प्रारम्भिक स्वरूप अपने अस्तित्व में आया। योग की गहन अनुभूति, आत्मा और परमात्मा के बारे में सम्पूर्ण रूप से जानने और तपस्या करने के लिए यह संस्था हैदराबाद से करांची (पाकिस्तान) में स्थानान्तरित हुई। करांची समुद्र के किनारे स्थिति एक शहर है जहाँ अरब सागर का अनन्त विस्तार और सागर की लहरें मन की भावनाओं को तरंगित करके अनन्त की ओर ले जाती है। इसलिए यह शहर तपस्या के दृष्टिकोण से प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को उपयुक्त लगा।

सन् 1937 से 1950 के 14 वर्षों के बीच इस संस्था के सदस्यों ने गहन तपस्या किया। इस बीच इस संस्था के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां और समस्याएं सामने आईं परन्तु इन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के दृढ़ संकल्प और आध्यात्मिक निर्देशन में हर विघ्नों-बाधाओं और समस्याओं को जीवन में खेल समझते हुए सहज ढंग से पार किया। एक बार कुछ शरारती तत्वों द्वारा लगाई गई आग से भी इनका आत्मबल कम नहीं

हुआ। बल्कि इनका आत्म, परमात्म निश्चय और साधना अग्नि की तरह और प्रखर और प्रज्ज्वलित होती गई।

त्याग, तपस्या और सेवा की कठिन साधना का पाठ संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इसमें तपस्यारत साधकों को सिखाया। कारांची में ओम मंडली के सदस्यों की दिनचर्या बहुत ही व्यवस्थित और अनुशासित थी। संस्था के स्त्री और पुरुष साधकों के आवास पूर्णत: अलग-अलग थे। हांलाकि ये योगाभ्यास तथा अन्य आध्यात्मिक गतिविधियों में सामूहिक रूप से भाग लेते थे। ऐसा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इसलिए किया कि इसके साधक सम्पूर्ण दैहिक आकर्षणों से मुक्त होकर इसके सदस्य फरिश्ता बनकर परमात्मा के संदेश को इस धरा पर कोने-2 में फैलाये। आध्यात्मिक साधना का पथ कठिन और जिन्दगी के विभिन्न उचाईयों और गहराईयों भरे आयामों से होकर गुजरता है जिसमें पल-पल आत्मनिरीक्षण, साधना एवं आध्यात्मिक सतर्कता की आवश्यकता होती है। अन्यथा विचलन और फिसलन की सम्भावनाएं बनी रहती है। अपने सांसारिक अनुभवों के कारण प्रजापिता ब्रह्मा बाबा इस बात के प्रति बहुत ही गम्भीर थे। इसलिए दैहिक आकर्षणों से मुक्त होने के लिए इसके साधकों को पहला पाठ पढ़ाया कि -''मैं एक शरीर नहीं हूँ। मैं चैतन्य ज्योतिर्विन्दुस्वरूप आत्मा हूँ''। आत्मा के इस अनुभयुक्त पाठ में इसके साधकों में दिव्य अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न बना दिया।

'ओम मण्डली' ही कालान्तर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से विख्यात हुआ। नारियों के नव सृष्टि के पुनर्स्थापना के कार्य में किये गये त्याग, तपस्या और सेवा के महान योगदान को सम्मान देते हुए पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने इस संस्था के नाम में 'ब्रह्माकुमारी' शब्द को जोड़ा। इस संस्था के नाम में जुड़ा हुआ 'ईश्वरीय विश्व-विद्यालय' शब्द स्वयं परमपिता परमात्मा शिव द्वारा स्थापित किये गए विश्व के कल्याणार्थ ऐसे आध्यात्मिक संस्थान से है जिसमें विश्व की सर्वधर्म की आत्माएं बिना किसी लिंग, धर्म, जाति, उम्र, नस्ल, क्षेत्र के भेदभाव के बिना आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। तकनीकी दृष्टिकोण से यह केन्द्र अथवा किसी राज्य सरकार द्वारा विधिक प्रक्रिया स्थापित विश्वविद्यालय नहीं है। परन्तु भारत में लगभग तीन सौ से अधिक विश्वविद्यालय होने के बावजूद मानवीय मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा को जो पराभाव हो रहा है, उसको रोकने में ये विश्वविद्यालय असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं। आज विश्वद्यिालयों में छात्रों की दिशाहीन राजनीति, मूल्यहीन आचरण, अध्यापकों की अध्यापन कार्यों में घटती रूचि के कारण शिक्षा के उन्नयन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के उन्नयन का कार्य नहीं कर पा रहें है। एक बार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. हरिगौतम ने इसके मुख्यालय पर आयोजित शिक्षाविद महासम्मेलन में भाग लेते हुए सन् 2001 में इस संस्था को ''यूविर्सल विश्वविद्यालय'' और 'सुपर यूनिवर्सिटी' कहा था। वास्तव में यहाँ प्रदान की जाने वाली शिक्षाओं और मानवीय मूल्यों की दिशा में किए जा रहे कार्यों के कारण यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय अपने आप में अद्वितीय और अनोखा है।

परमात्मा के आदेशानुसार यह संस्था 5 मई सन् 1950 को करांची से अपने वर्तमनान मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान में स्थानान्तरित हुई। माउण्ट आबू में इसका मुख्यालय 'वृजकोठी' में था जो वर्तमान मुख्यालय ''पाण्डव भवन'' से कुछ दूरी पर था। वर्तमान मुख्यालय में ही वह 'कुटी' आज भी अवस्थित है जिसमें रहकर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने त्याग, तपस्या और विश्व सेवा के लिए मानवता के सेवार्थ दृढ़ निश्चयी श्वेत वस्त्रधारियों का करवां तैयार कर दिया जो आज पिताश्री ब्रह्मा बाबा के संकल्प को पूरा करने में तन-

मन-धन से पूरा करने में निरन्तर लगे हुए हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का पहला सेवाकेन्द्र दिल्ली में खोला गया। इसके पश्चात भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोगों के निमन्त्रण पर सेवाकेन्द्र खुलते गए। वर्तमान समय में इस आध्यात्मिक संस्था के सेवाकेन्द्रों की संख्या 8500 से अधिक है और इसमें निरन्तर विस्तार जारी है। सन् 1962 में विदेश में ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय सेवाकेन्द्र का प्रारम्भ हुआ। सन् 1962 में यह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ से गैर सरकारी संगठन (एन. जी. ओ.) के रूप में जुड़ी। यह संस्था इसके महत्वपूर्ण संगठनों आर्थिक और सामाजिक परिषद और यूनीसेफ से परामर्शदाता के रूप में जुड़ी हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संस्था द्वारा विश्वशान्ति, सद्भावना एवं मानवीय मूल्यों के प्रयासों का सम्मान करते हुए इस संस्था की मुख्य दिवंगत पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी को सन् 1986 में 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दूत पुरस्कार' से सम्मानित किया। सन् 2000 में यू. एन. ओ. द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की संस्कृति वर्ष के अवसर पर विश्वशान्ति के पक्ष में जनमत तैयार करने हेतु साढ़े तीन करोड़ लोगों से हस्ताक्षरपत्र एकत्रित करने के लिए यू. एन. ओ. द्वारा इस संस्था को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

इस संस्था ने अध्यात्म द्वारा व्यक्ति और समाज के विभिन्न वर्गों जैसे प्रशासक, वैज्ञानिक, शिक्षक, युवा, महिला, चिकित्सक, न्यायविद्, मीडियाकर्मी, कलाकार, धार्मिक नेता, राजनीतिज्ञ, ग्रामीण जनता इत्यादि के सशक्तिकरण के लिए सत्रह प्रभाग निर्मित किया है। इन प्रभागों द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के महासम्मेलन, कार्यशालाओं, परिसंवादों और आध्यात्मिक अनुभूति एवं चिन्तन शिविरों का आयोजन ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय, माउण्ट आबू के विभिन्न भागों में सम्बन्धित सेवाकेन्द्रों और सरकारों के साथ भी मिलकर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का समय प्रति समय आयोजन किया जाता है।

1: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का समाज में योगदान: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय समाज में लगभग उपेक्षित समझे जाने वाली नारी समाज का आध्यात्मिक सशक्तिकरण करके उन्हें मानवता के सेवा में आने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस दृष्टिकोण से ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सन् 1937 से किया जा रहा प्रयास अविस्मरणीय है जो समाज में इस संस्था को अलग पहचान देता है। वर्तमान समय में यह आध्यात्मिक संस्था नारी सत्ता द्वारा विश्व स्तर पर प्रशासित और संचालित हो रही है। इसके अतिरिक्त इस संस्था ने मनुष्य को स्वयं की स्वयं से पहचान कराकर उसकी अन्तर्निहित शक्तियों से आत्म-साक्षात्कार कराया है। व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक चेतना, आत्मिक शान्ति, प्रेम, बन्धुत्व, पवित्रता इत्यादि मूल्यों का प्रत्यक्ष बोध हुआ है। इससे समाज में इन मूल्यों के प्रति लोगों का ध्यानाकर्षण हुआ है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आध्यात्मिक शिक्षाओं ने मानसिक तनाव, दबाव, चिन्ता से लोगों को मुक्त करके जीवन जीने की कला सिखाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय देश-विदेश में बड़े पैमाने पर अभियान चलाकर नशामुक्ति, अन्धविश्वास से मुक्ति, स्वच्छता, साक्षरता के लिए प्रेरित करती है। गाँवों के विकास के लिए देश, प्रदेश, जिला व तहसील स्तर पर संस्था के स्थानीय सेवाकेन्द्रों द्वारा अभियान चलाये जाते हैं। इससे लाखों लोगों के जीवन में अदभुत क्रान्ति आयी है। युवाओं के लिए भी विशेष कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इसमें युवाओं को सकारात्मक जीवनशैली, अश्लीलता तथा हिंसा से दूर रहने के लिए राजयोग ध्यान और आध्यात्मिकता के जरिये इनमें विशाल परिवर्तन आता है।

2: श्रेष्ठ समाज के नव निर्माण हेतु कार्य: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा की जा रही सेवाएं समाज के नव निर्माण हेतु हैं। क्योंकि यह संस्था परम्परागत समाज के पुन: संरचना और व्यवस्था से जुड़ी हुई नहीं है अर्थात यह संस्था गरीबों, वृद्धों, असहायों को अन्न, धन, वस्त्र वितरण नहीं करती है। वरन् यह संस्था समाज में गरीबाी और समस्याओं के मूल कारणों का समाधान आध्यात्मिकता के द्वारा करती है। गरीबी का मूल कारण वैचारिक गरीबी है अर्थात जब व्यक्ति के अन्दर व्यर्थ और तमोप्रधान संकल्प चलते हैं तो उसी के अनुसार वह कार्य करता है अथवा चलने वाले मानसिक संकल्पों के अनुसार व्यक्ति में आदतों का निर्माण होता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि संकल्प ही किसी कर्म का मूल कारण होता है। सिगरेट का धूम्रपान कोई व्यक्ति अकस्मात् नहीं करता है। सर्व प्रथम उसके अन्दर सिगरेट पीने का संकल्प चलता है। जो व्यक्ति इस संकल्प को अपने मन को समझाकर रोक लेता है वह धूम्रपान नहीं कर सकता है। परन्तु जिस व्यक्ति के अन्दर सिगरेट पीने का संकल्प शक्तिशाली होता है। वह सिगरेट का सेवन अवश्य करेगा। क्योंकि सिगरेट के डिब्बे के उपर वैधानिक चेतावनी स्पष्ट लिखी होती है कि -'सिगरेट पीने से कैन्सर होता है' इसलिए कमजोर संकल्प वाले शिक्षित व्यक्ति इस वैधानिक चेतावनी को पढ़ने के बावजूद भी सिगरेट का धूम्रपान करते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय व्यक्ति को 'आत्म ज्ञान' और 'राजयोग' के द्वारा स्वयं के वास्तविक स्वरूप की अनुभूति कराकर उसका मानसिक सशक्तिकरण करता है। इससे व्यक्ति को बुराईयों का ज्ञान और उससे बचने की मानसिक शक्ति प्राप्त हो जाती है। वैसे यह भी ध्रुव सत्य है कि गरीबी ईश्वरीय देन नहीं है। यह व्यक्ति और समाज की कमजोर अवस्था और व्यवस्था के कारण होती है। गरीब व्यक्ति कठोर परिश्रम, नियमित दिनचर्या, आध्यात्मिक ज्ञज्ञन द्वारा अपनी चेतना का प्रसार करके आर्थिक रूप से समृद्ध व्यक्ति बन सकता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी इश्वरीय विश्व विद्यालय व्यसन मुक्ति अभियानों, स्वास्थ्य मेलों, मादक-द्रव्यों के विरूद्ध विभिन्न आध्यात्मिक सशक्तिकरण के द्वारा समाज के नवनिर्माण में लगा है। इसके पूरे विश्व भर में फैले हुए सेवाकेन्द्रों के माध्यम से समाज के नवनिर्माण का कार्य बहुत ही तीव्र गति से सम्पन्न हो रहा है। संस्था के मुख्यालय पर वर्ष भर आयोजित होने वाले महासम्मेलन विश्व के नवनिर्माण की योजना का ही हिस्सा हैं।

3: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई-बहनों का चयन: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में कार्य-संचालन अथवा प्रशासनिक दृष्टिकोण से भाई-बहनों का पद नहीं होता है। इस संस्था में आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह माना जाता है कि प्रत्येक मनुष्य में एक चैतन्य अविनाशी आत्मा इस शरीर की विभिन्न कर्मेन्द्रियों के माध्यम से कर्म कर रही है और प्रत्येक आत्मा एक परमात्मा की अविनाशी संतान हैं। इस दृष्टि से सभी मनुष्यात्माएं आपस में भाई-भाई है। परन्तु दैहिक दृष्टिकोण से पुरूष को 'भाई' और महिलाओं को बहन कहा जाता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से कोई भी व्यक्ति अपनी स्वेच्छानुसार ही जुड़ता है। उसका औपचारिक ढंग से चयन नहीं किया जाता हे। सात दिन का प्रारम्भिक कोर्स करने के बाद व्यक्ति अपनी स्वेच्छानुसार इस संस्था से जुड़ सकता है। संस्था से जुड़ने वाले पुरूष को 'ब्रह्माकुमार' और महिला को 'ब्रह्माकुमारी' कहा जाता है। अपने स्वेच्छानुसार अंशकालिक या पूर्णकालिक सदस्य इस संस्था से जुड़ सकता है।

4: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाईयों एवं बहनों का स्थानान्तरण:प्रशासनिक दृष्टिकोण से संस्था की मुख्य प्रशासिका को यह अधिकार है कि वह किसी भी पूर्णकालिक समर्पित भाई अथवा बहन को पूरे भारत अथवा विश्व के किसी भी देश में ईश्वरीय सेवार्थ भेज सकती हें। परन्तु प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायित्वपूर्ण और सरल बनाने के लिए ईश्वरीय विश्व विद्यालय को बारह मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। परन्तु इस विभाजन का आधार राजनीतिक अथवा भौगोलिक कारण नहीं है। वरन ईश्वरीय सेवाओं के संचालन के आधार पर प्रशासनिक क्षेत्रों का विभाजन किया गया है। सामान्य रूप से सम्बन्धित क्षेत्र का मुख्य निमित्त भाई अथवा बहन उस क्षेत्र के भाई-बहनों का ईश्वरीय सेवार्थ स्थानान्तरण की प्रक्रिया सम्पन्न करते हैं। सेवाकेन्द्रों पर स्थानान्तरित करते समय आध्यात्मिक योग्यता के साथ सम्बन्धित क्षेत्र विशेष की अन्य कई बातों जैसे भाषा, लोगों की सामाजिक एवं धार्मिक कार्य संस्कृति का भी ध्यान रखा जाता है। परन्तु स्थानान्तरण के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी पूर्णकालिक समर्पित व्यक्ति को आवश्यकतानुसार कहीं भी स्थानान्तरित किया जा सकता है।

5: संस्थानों के संचालन की प्रक्रिया: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मौलिक रूप से आध्यात्मिक संगठन है और यह किसी भी व्यावसायिक संस्थानों का संचालन नहीं करता है। जैसे कि वर्तमान समय में अनेक धार्मिक संस्थाएं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों अथवा संस्थानों का संचालन करती हैं। हाँ, ईश्वरीय सेवा के कार्यों को व्यापक और सुचारू रूप से संचालन के लिए इसके कई अन्य संगठन जैसे- राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट, ग्लोबल हास्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर हैं। प्रशासनिक दृष्टिकोण से ये संस्थान पूर्णत: स्वतंत्र हैं परन्तु ईश्वरीय सेवायें यहां से सुचारू रूप से संचालित होती हैं।

6: सदस्यों का आर्थिक योगदान: यह संस्था किसी भी प्रकार का चन्दा अथवा डोनेशन फीस इत्यादि नहीं लेती है। संस्था द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग का प्रशिक्षण नि:शुल्क किया जाता है। संस्था से जुड़ने वाले सदस्य ईश्वरीय सेवा के कार्यक्रमों के संचालन में स्वैच्छिक रूप से करते है। इसके पीछे उनकी यह सोच होती है कि संस्था के कार्यो का व्यापक रूप से प्रसार हो और हरेक मनुष्य का आध्यात्मिक कल्याण हो। बहुत से सदस्य जो संस्था से जुड़ने से पूर्व फिल्म, पान, बीड़ी, सिगरेट, शराब इत्यादि का सेवन करते हैं। संस्था से जुड़ने पर इसे छोड़ देते हैं। इस बचत होने वाले धन को स्वैच्छिक रूप से ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित करते हैं।

7: संस्था का वार्षिक पर्व: संस्था द्वारा प्राय: परम्परागत रूप से भारतीय त्यौहारों को 'आध्यात्मिक विधिपूर्वक' मनाया जाता है। जैसे होली का त्यौहार संस्था द्वारा रंग इत्यादि एक दूसरे पर फेंककर पारम्परिक रूप से नहीं मनाया जाता है। इस संस्था में होली को आध्यात्मिक प्रेरणा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन विशेष योग का कार्यक्रम रखा जाता है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति आत्म निरीक्षण करता है कि सभी प्रकार की आन्तरिक बुराईयां योगाग्नि से भस्मीभूत कर दी गई है। यदि अचेतन मन में कोई बुराई अवशेष बची हुई है तो उसे ज्ञान और योग से समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लिया जाता है। इसी प्रकार रक्षाबन्धन के त्यौहार को सेवा दिवस के रूप मनाया जाता है। संस्था से जुड़ी बहने जेलों अनाथालयों, वृद्धा आश्रमों, समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों के पास राखी बांधती है। इसके बदले उनसे बुराईयों का दान मांगकर इन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा करवाती है। किसी भी प्रकार के धन या वस्तु का आग्रह स्वीकार नहीं करती हैं। दशहरा भी इसी

प्रकार आध्यात्मिक रहस्यों के साथ मनाया जाता है। क्योंकि रावण के संस्कार केवल रावण में ही नहीं थे बल्कि आज पूरा मानव इसकी गिरफ्त में है। इसलिए होलिका दहन स्थूल वस्तुओं का नहीं बल्कि अपने अन्दर की बुराईयों का करना है। जिससे कभी भी हमारे अन्दर रावण समान दु:ख देने वाले संस्कार न हो।

संस्था द्वारा इसके साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 'निर्वाण दिवस' 18 जनवरी को प्रतिवर्ष 'अव्यक्त दिवस' तथा यज्ञ माता मातेश्वरी जगदम्बा के निर्वाण दिवस 24 जून को 'मम्मा स्मृति दिवस'के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार संस्था द्वारा मनाये जाने वाले दो पर्व विशिष्ट, अलग और महत्वपूर्ण हैं।

8 :सेमीनारों के विषयों का चयन: सेमीनार का आयोजन संस्था द्वारा बनाये गये सत्रह विभिन्न प्रभागों द्वारा किया जाता है। इन विभिन्न प्रभागों के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय, मुख्ययालय संयोजक तथा कार्यकारिणी के सदस्य मिलकर सेमीनार की विषय वस्तु का चयन करते हैं। सामान्य रूप से संस्था की वार्षिक मीटिंग में पूरे वर्ष के लिए चलाये जाने वाले मूल्यनिष्ठ समाज के नवनिर्माण के लिए आवश्यक समझे जाने वाले 'विषय वस्तु' का चयन कर लिया जाता है। विभिन्न प्रभाग इसके अनुसार ही विभिन्न वर्ग से सम्बन्धित महासम्मेलनों, सेमीनारें का आयोजन करते समय सेमीनार की विषय-वस्तु का यथा सम्भव इसके अनुरूप चयन करते हैं। महासम्मेलनों, सेमीनारों का आयोजन करते समय सेमीनार की विषय-वस्तु का यथ सम्भव इसके अनुरूप चयन करते हैं। परन्तु एक बात यहाँ स्पष्ट रूप से उल्लेखनीय है कि संस्था द्वारा आयोजित किये जाने वाले सभी सेमीनारों महासम्मेलनों का सम्बन्ध मूल्यनिष्ठ जीवन और समाज के नव निर्माण से ही होता है।

9 : प्रशासनिक नियन्त्रण की व्यवस्था: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था आध्यात्मिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित है। यह पूरे विश्व में अपने आप में अनूठी और अनुकरणीय है। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति यहाँ के प्रशासन से मुग्ध हो जाता है और आश्चर्यभरी और प्रश्नवाचक दृष्टि से प्रश्न करता है कि-''कोई किसी को आदेश भी नहीं कर रहा है और सारा काम हो भी रहा है।'' इस संस्था से जुड़ सभी सदस्य आत्मानुशासन की भावना से प्रेरित होते हैं। उन्हें अपने उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों का बोध रहता है और वे स्वत: अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं। इस प्रकार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था पूरे समाज के लिए अनुकरणीय है।

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्वत पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, पाण्डव भवन के नाम से जाना जाता है तथा बढ़ती गतिविधियों के कारण आबू पर्वत पर ही ज्ञान सरोवर एकेडेमी 1500 लोगों के आवासीय सुविधाओं से युक्त परिसर का निर्माण किया गया है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय के रूप में एक पाण्डव भवन तथा 'युनिवर्सल पीस हाल' का निर्माण किया गया है। यह वही स्थान है जहाँ पर संस्था के साकार प्रजापिता ब्रह्मा ने इस संस्था को विराट रूप देने के लिए अपने तपोबल से इसमें आत्माओं को अपने वास्तविक स्वरूप पहचानने का दिव्य नेत्र मिलता है। दो दशक पूर्व निर्मित युनविर्सल पीस हाल जिसमें 1600 लोगों के बैठने की व्यवस्था तथा 18 भाषाओं में ट्रांसलेशन की सुविधा से युक्त है।

10 : राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के अन्तर्गत प्रभागो का निर्माण: समाज में सभी वर्गों को साथ लेकर मूल्यों को प्रतिस्थापित करने, पारदर्शी बनाने तथा सफल प्रशासनिक व्यवस्था के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की भगिनी संस्था राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान बनाया गया है।

इसके अन्तर्गत 18 प्रभाग जिसमें शिक्षा, प्रशासक, राजनीतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं अभियन्ता, मीडिया, मेडिकल, न्यायविद, कला एवं संस्कृति, व्यापार एवं उद्योग, महिला, ग्राम विकास, युवा, यातायात एवं परिवहन, खेलकूद, सुरक्षा, समाज सेवा आदि प्रभागों का निर्माण किया गया है। इसके अन्तर्गत इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को समय प्रति समय आमंत्रित करके उनके लिए मुख्यालय तथा स्थानीय और राज्य स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों में मूल्यनिष्ठता की स्थापना के लिए राजयोग को प्रमुखता दी जाती है क्योंकि इससे ही आन्तरिक स्थिति का सशक्त होगी और मूल्यों की धारणा सम्भव है।

11: मीडिया के के द्वारा संस्था का प्रचार-प्रसार तथा मीडिया प्रभाग की कार्यप्रणाली: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सहयोगी प्रतिष्ठान राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के मीडिया प्रभाग मीडिया में मानवीय मूल्यों के प्रसार के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। संस्था द्वारा प्रतिवर्ष कोई न कोई कार्यक्रम हमेशा चलता रहता है। उसकी कवरेज कर समाचारपत्रों, टी. वी. रेडियो, चैनलों, बेबसाईट आदि में भेजते है जिससे पूरे भारत के लोग इन कार्यक्रमों का लाभ उठा सके। यह केवल इतना तक ही सीमित नहीं है पूरे विश्व में फैली इस संस्था द्वारा स्थानीय स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। ग्राम विकास अभियान, नशामुक्ति शिविर, तनावमुक्त प्रबन्धन, स्व-प्रबन्धन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिससे बहुत सारे लोग अपने जीवन को बदलने का प्रयास करते हैं। जिसकी कवरेज कर समाचार माध्यमों के जरिये इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए मीडिया प्रभाग कार्यरत और प्रयासरत रहता हैं।

इसके अलावा यह प्रभाग विभिन्न प्रकार से जनसंचार के माध्यमों जैसे इलेक्ट्रानिक, प्रिन्ट, साइबर मीडिया तथा सरकारी एवं प्राईवेट संस्थानों के जनसम्पर्क एवं सूचना प्रभाग, सूचना प्रौद्योगिकी, राज्य एवं केन्द्र का सूचना प्रभाग, पत्रकारिता के विद्यार्थी, विश्वविद्यालय एवं कालेजों में पत्रकारिता विभाग से जुड़े लोगों के लिए प्रतिवर्ष अनेक महासम्मेलनों, कार्यशालाओं, परिसंवाद, समूह चर्चाओं, आत्मानुभूति चिन्तन शिविरों का आयोजन करता है। इस कार्यक्रम में भारत के लगभग सभी समाचार पत्र, पत्रिकाओं और दूरदर्शन, रेडियो तथा अन्य प्राईवेट टी. वी. चैनलों तथा केबल टी. वी. के प्रतिनिधि इन कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

मीडिया प्रभाग के जरिये यहाँ की राजयोग प्रणाली को लोगों तक पहुंचाने एवं अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई चैनलों जैसे संस्कार, जागरण, आस्था, ई. टी. वी.(सभी भाषाओं में) रेडियो, एफ एम. चैनलों में अपने कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। , और अन्य क्षेत्रीय भाषा के चैनलों पर नियमित कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। संस्था की गतिविधियों को अधिक तीव्रगामी बनाने के लिए आई. पी. डिश टी. वी. द्वारा यहाँ के कार्यक्रमों को सीधा प्रसारण किया जाता है। केवल मुख्यालय ही नहीं बल्कि पूरे भारत में संस्था द्वारा होने वाले बड़े स्तर के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण किया जाता है। मुख्यालय में होने वाले कार्यक्रमों की कवरेज को ई-मेल, फैक्स आदि से पूरे भारत में स्थानीय सेवाकेन्द्रों पर भेज दिये जाते है जिससे वहाँ पर मीडिया में कार्य करने वाले भाई अथवा बहनें वहाँ के संचार माध्यमों में प्रकाशित कराते हैं।

मीडिया प्रभाग को अधिक प्रभावी बनाने के लिए पूरे भारत में संस्था को जोन, सब जोन के रूप में विभक्त किया गया है। हर एक जोन तथा सब जोन में मीडिया प्रभाग का जोनल कोआर्डिनेटर, सहायक

जोनल कोआर्डिनेटर नियुक्त किया गया है। इसके अलावा प्रत्येक सेवाकेन्द्रों पर एक भाई अथवा बहन को मीडिया का कार्य करने का निमित्त बनाया गया है जो मुख्यालय के मीडिया प्रभाग से मिलने वाली सूचनाओं को शिघ्रता से अमल में लाता है। इसके अलावा जोन, सब जोन तथा सेवाकेन्द्र पर होने वाले कार्यक्रमों के सेवा समाचार भी मीडिया प्रभाग तथा मुख्यालय में ई-मेल तथा फैक्स के द्वारा भेजते हैं। जब मुख्याल में मीडिया प्रभाग द्वारा जब भी महासम्मेलन तथा सेमिनार का आयोजन होता है तो कार्यक्रम सम्बन्धित सूचनायें और फोल्डर जोन, सब जोन तथा स्थानीय सेवाकेन्द्रों को भेज दी जाती है। और वहाँ के मीडिया में कार्य करने वाले निमित्त भाई अथवा बहन मीडिया से जुड़े लोगों को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते है। इसके बाद उनके आने की सूचना मुख्यालय में मीडिया प्रभाग को भेज देते हैं।

मीडिया सर्विस सेन्टर की स्थापना: मीडिया प्रभाग अपनी कार्यप्रणाली को और व्यापक स्तर पर करने के लिए उन शहरों में मीडिया सर्विस सेन्टर की स्थापना करता है, जिन शहरों में समाचारपत्रों का प्रकाशन होता है। अर्थात जहाँ से समाचारपत्र छपते हैं। वहाँ पर संस्था के स्थानीय सेवाकेन्द्रों पर मीडिया सर्विस सेन्टर की स्थापना करता है।जिसमें एक भाई तथा एक बहन होती है। वहाँ मीडिया के सारो साजो समान उपलब्ध होते है। मुख्यालय से जाने वाली सूचनाओं को स्थानीय स्तर पर प्रचारित और प्रसारित करते हैं। वहाँ होने वाले सभी कार्यक्रमों के समाचार फोटो तथा मीडिया कवरेज की विस्तृत जानकारी देते हैं।

संस्था द्वार प्रकाशित होने वाली समाचार पत्र-पत्रिकायें: संस्था का संदेश, कार्यक्रमों के समाचार को और व्यापक रूप से भारत तथा विदेशों में पहुंचाने के लिए कुछ समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है।

ज्ञानामृत हिन्दी मासिक पत्रिका: जिसमें 32 पेज की 'ज्ञानामृत' मासिक पत्रिका है। जो संस्था की सबसे पहली पत्रिका जिसका प्रकाशन सन् 1965 में हुआ। तब इसके सम्पादक ब्र. कु. जगदीश चन्द्र हसीजा थे। आज यह पत्रिका भारत के अलावा विदेशों में भी जाती है। इसके सम्पादक ब्र. कु. आत्म प्रकाश तथा सहसम्पादक ब्र. कु. उर्मिला बहन है। भारत तथा विदेशों में इसकी प्रसार संख्या एक लाख 75 हजार है। इसकी छपाई, कम्पोजिंग का कार्य 'ओम शान्ति प्रेस' में शान्तिवन आबू रोड में होता है। इसकी प्रति कापी मूल्य 6 रूपया तथा वार्षिक शुल्क 70 रूपये है। आजीवन शुल्क 1500 रूपया है। इसी तरह अंग्रेजी में

वर्ल्ड रिन्यूवल अंग्रेजी मासिक पत्रिका: इसी तरह अंग्रेजी पाठकों के लिए अंग्रेजी भाषा में सन् 1970 में इसका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसमें सम्पूर्ण भारत के ब्रह्माकुमारीज सेवाओं के समाचार फोटो तथा बौद्धिक लेख होते है। जो सम्पूर्ण भारतवर्ष के चुनिन्दा लेखकों द्वारा लिखित होते हैं। यह मैगेजिन भी मासिक है और इसके तात्कालिक सम्पादक भी ब्र. कु. जगदीश चन्द्र हसीजा थे। परन्तु उनके देहान्त के बाद इसके प्रधान सम्पादक ब्र. कु. निर्वेर, सहायक सम्पादक ब्र. कु. आर. एस. भटनागर तथा ब्र. कु. रंजीत फुलिया है। जिनके निर्देशन में इस पत्रिका का ओम शान्ति प्रेस के द्वारा प्रकाशित होता है। इसकी प्रसार संख्या 13 हजार है।

प्यूरीटी मासिक समाचारपत्र: अंग्रेजी में संस्था का पहला मासिक समाचार पत्र है जिसका प्रकाशन सन् 1981 में दिल्ली से प्रारम्भ हुआ। इसके प्रधान सम्पादक ब्र. कु. बृजमोहन आनन्द तथा सम्पादक ब्र. कु. आशा बहन है। इसका शुल्क प्रति कापी 6 रूपया तथा वार्षिक शुल्क 70 रूपया है। इसकी प्रसार संख्या

20 हजार है।

ओम शान्ति मीडिया पाक्षिक समाचारपत्र: संस्था का एकमात्र पाक्षिक समाचारपत्र 'ओमशान्ति मीडिया' हिन्दी का प्रकाशन मीडिया प्रभाग द्वारा सन् 1999 में प्रारम्भ हुआ। इसके प्रकाशक ब्र. कु. करूणा सम्पादक प्रो. कमल दीक्षित तथा सयुंक्त सम्पादक ब्र. कु. गंगाधर है। यह समाचार पत्र प्रत्येक 15 दिन में दैनिक भास्कर प्रेस जयपुर से मुद्रित तथा प्रेषित होता है। भारत में प्रति कापी का मूल्य 5 रूपया, वार्षिक शुल्क 120 रूपये तथा आजीवन 1800 रूपये है। विदेशों में यह शुल्क वार्षिक शुल्क 800 रूपये तथा आजीवन शुल्क 18 हजार रूपये है। इसकी प्रसार संख्या भारत तथा विदेश में 15 हजार है। इस समाचारपत्र के समाचर संकलन के लिए भारत के जिले स्तर पर एक संवाददाता की अवैतनिक नियुक्त किया गया है। जो स्थानीय पर होने वाले कार्यक्रमों का समाचार एवं फोटो ई-मेल, कूरियर एवं पोस्ट से संस्था के मुख्यालय के ओम शान्ति मीडिया समाचारपत्र के ऑफिस में भेज देते हैं। इसके अलावा फीचर, प्रश्न उत्तर आदि का भी प्रकाशन होता है। मुख्यालय से प्रकाशित होने वाला यह पहला समाचारपत्र है। इसमें भारत के साथ विदेशों में भी ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों पर होने वाली कार्यक्रमों के सेवा समाचार होते हैं।

इसके अलावा मासिक समाचारपत्र 'ज्ञान वीणा' है जो भोपाल से तथा एक 'प्रगति पथ प्रदर्शक' हिन्दी में जयपुर से प्रकाशित होती है। भारत के अलग स्थानों से क्षेत्रिय भाषाओं में 'अमृत कलश' मराठी भाषा में, 'ज्ञानामृत' गुजराती भाषा में, उड़ीया, तमिल, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषाओं में भी पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। इसके अलावा नेपाल में 'ओम शान्ति संदेश' नाम से भी एक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है।

संस्था का साहित्य: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सदैव मानवमात्र का व्यक्तित्व का निर्माण करने तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। इसका आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग साधना के लिए विभिन्न विषयों पर अनेक भाषाओं में पुस्तके प्रकाशित की गयी। जिसमें सारे पुस्तक मुख्यालय से ही प्रकाशित होती है। जिसमें हिन्दी की 153, अंग्रेजी में 76, गुजराती 38 तथा पंजाबी भाषा में 14 साहित्य उपलब्ध है।

संस्था द्वारा निकलने वाली आडियो तथा वी. सी. डी.: संस्था द्वारा आध्यात्मिक ध्यान और योग साधना के लिए अनेक गीत बनाये गये हैं। इसके लिखने वाले संस्था के सदस्य होते है तथा गाने वाले प्रोफेसनल्स होते है। इसमें कुल 118 कैसेटे बनायी गयी है। जिसमें हिन्दी के अलावा तेलुगु, कन्नड़, उड़ीया, तमिल और मलयालम भाषाओं में उपलब्ध होती है। गीतों के साथ पिक्चर्स वाले वी. सी. डी. सांग्स भी उपलब्ध होते है। इसके अलावा बौद्धिक लेक्चर्स, राजयोग साधना कमेन्ट्री आदि भी बनायी गयी है। जिससे साधक इसको सुनते हुए अपनी मन को सकारात्मक दिशा देने में सक्षम होता है। इसको □□□.□□□□□□□□□□□□□□□.□□□ पर भी इसको देखा व सुना जा सकता है।

ज्ञानसरोवर परिसर

इसके अलावा अरावली की पर्वतमालाओं से घिरे सालगांव स्थित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, कार्यशालाओं तथा संगोष्ठियों के लिए 'सुखमय संसार के लिए बेहतर अकादमी' (एकेडमी फार ए बेटर वर्ल्ड) ज्ञान सरोवर का निर्माण किया गया है। अलग-अलग प्रभागों से सम्बन्धित लोगों के जीवन मे मूल्यों के समावेश हेतु 16 ट्रेनिंग सेन्टर का निर्माण किया गया है। यहाँ पर सभी वर्गों में मूल्यनिष्ठता तथा पारदर्शिता लाने के लिए समय-समय पर सम्मेलन, सेमिनार, संगोष्ठियों, वार्ता, समूह विमर्श आदि का समय

प्रति समय आयोजन किया जाता है। यहाँ भौतिकता के चकाचौंध में आध्यात्मिकता और विज्ञान का सुन्दर सामंजस्य है। सूर्य की रोशनी का भरपूर उपयोग किया गया है। भोजन प्रणाली तथा गर्म पानी, चाय एवं दूध गर्म करने के लिए सौर उर्जा का उपयोग होता है। इसके अलावा आदिवासी तथा जनजातीय लोगों को मन को स्वस्थ बनाने के साथ-साथ तन को स्वस्थ बनाने के लिए आत्याधुनिक चिकित्सा प्रणाली के लिए ग्लोबल हास्पिटल तथा रिचर्स सेन्टर का निर्माण किया गया है। खेल कूद तथा मनोरंजन के लिए यहाँ का निर्मित पीस पार्क आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है।

ग्लोबल हास्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मन को स्वस्थ रखने के लिए तो प्रयासरत है ही परन्तु यहाँ बसे ग्रामीण तथा आदिवासी लोगों को पूर्ण स्वस्थ रखने एवं समय-समय पर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए एक ग्लोबल हास्पिटल तथा रिसर्च सेन्टर का निर्माण किया गया है। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त यह हास्पिटल गरीबों तथा असहाय लोगों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा प्रदान करता है। इसमें एलोपैथ, होमियो पैथ, आयुर्वेद, चुम्बकीय चिकित्सा तथा नेचुरोपैथी की चिकित्सा सुविधायें मौजूद है। इसमें विदेशों से चिकित्सकों से सुविधायें ली जाती है। यहाँ गरीब तथा निचले स्तर के जीवन यापन करने वालों के लिए अति सहज एवं वरदान साबित हो रहा है। यहाँ दूर-दूर से लोग आकर अपने-अपने तन तथा मन का इलाज कर पूर्ण स्वस्थ होकर जाते है। तथा अपनी जीवनशैली परिवर्तन करके समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करते है।

शान्तिवन

माउण्ट आबू की तलहटी में ब्रह्माकुमारीज संस्था का तिसरा काम्प्लेक्स 60 एकड़ में शान्तिवन परिसर का निर्माण किया गया है। यहाँ विश्व का सबसे बड़ा सौर उर्जा कुकिंग केन्द्र है जिसके द्वारा 35 हजार लोगों का भोजन सूर्य की रोशनी से कम समय में ही तैयार हो जाता है। इस सौर ऊर्जा प्रणाली से वायु प्रदूषण पर मुक्ति के साथ-साथ कम खर्च में ही ये सुविधायें मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। चाय, दूध, गर्म पानी की भी सुविधायें प्रदान होती है। इसके अलावा एशिया का सबसे बड़ा हाल जिसका नाम 'डायमंड हाल' है जिसमें 20 हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था है। इस हाल में 18 भाषाओं के अनुवाद की सुविधा है। यहॉ पर होने वाले विशाल कार्यक्रमों के ट्रांसमिशन की सुविधा उपलब्ध है। परिसर के अन्दर ही टेलिफोन, ट्रांसपोर्ट, पोस्ट आफिस, बैंक एवं अत्यानुधिक सुविधाओं से सुसज्जित है। पानी का पूर्ण सदुपयोग के लिए एस. टी. पी. प्लांट लगा है। जो स्नानागार तथा अस्वच्छ पानी को पुन: फिल्टर करके पौधों की सिंचाई आदि में उपयोग होता है जिससे पौधों को पर्याप्त पोषक तत्व भी मिल जाते है और पानी का पूर्ण सदुपयोग हो जाता है। रेगिस्तान में भी हरे-भरे गुलशन में इसकी सुन्दरता से नहीं प्रतीत होता कि यहाँ कभी पानी की भी समस्या होती होगी। यहाँ की हर कार्य प्रणाली आधुनिक सुविधाओं से युक्त तथा आध्यात्मिकता से सुवासित होती है। इस परिसर की आवासीय क्षमता 15 हजार है। यहाँ भाईयों के रहने के लिए ब्रह्मपुत्रा कालोनी, कमल कुंज भवन भवन है तथा माताओं एवं बहनों के ठहरने के लिए ज्ञान गंगा कालोनी, इन्द्रप्रस्थ, शान्ति कुंज, निर्मल कुंज, विश्राम भवन, लोटस हाउस निर्मित किया गया है। यहाँ विशेष मेहमानों के लिए डायमण्ड हाऊस, न्यू डायमंड हाऊस का निर्माण किया गया है। यहाँ पूरे विश्व स्तर के बड़े पैमाने पर सम्मेलन तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित होते रहते है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका विश्व की स्थितप्रज्ञ योगी राजयोगिनी दादी जानकी जी हैं। एक वर्ष पूर्व 25 अगस्त, 2007 को संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी का निधन हो गया था इसके बाद इसके बाद दादी जानकी जी इस संस्था की मुख्य प्रशासिका बनी। इससे पहले दादी जानकी जी भारत से बाहर विदशों के सेवाकेन्द्रों का संचालन लन्दन में रहकर करती थी। और संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका थी। दादी जानकी विश्व की प्रथम 'स्थिर चित्त' महिला है। इनके सानिध्य में एक बेहतर समाज की स्थापना के लिए प्रतिवर्ष अनेक वर्गो के लिए सम्मेलन, सेमिनार, संगोष्ठियां, सर्व धर्म सम्मेलन, कार्यशालायें, प्रवचन, राजयोग शिविर, झांकियों तथा विभिन्न रैलियों एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। इसमें आत्म विश्लेषण को प्राथमिकता दी जाती है। राजयोग की विधि से मनुष्य को उसके अतीत का परिचय कराकर उसे देवत्व स्थिति की ओर प्रेरित करता है। सात दशक पहले इस आध्यात्मिक क्रान्ति का उदय हुआ और आज देखते ही देखते एक विराट वृक्ष का रूप ले चुकी है लाखों की तादाद में लोग आत्म संयम, नियम से स्वयं को सशक्त बनाकर एक सुखी एवं शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे है।

यही नहीं बल्कि सदियों से पुराणों किताबों और वेदों में वर्णित जीवनमुक्ति का भी विश्लेषण कराया जाता है जिसमें आत्मा शरीर में रहते भी शरीर से मुक्त जीवन मुक्ति का अनुभव करते है। यह एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही नहीं बल्कि एक 'संस्कार परिवर्ततन' केन्द्र है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com